OCTOBER

23 THURSDAY

43rd Week • 296 Day

NOTES :

① 18/12/20

B.A. Part I
Hindi Hons
मध्यकालीन हिंदी
काव्य Paper I
(बिहारी)

डॉ० अरमान कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिंदी विभाग
ए०एन० एस० कॉलेज
जहानाबाद

प्रश्न:— बिहारी की प्रस्तुत पंक्तियों का अर्थ स्पष्ट करें —

सुनत पथिक मुँह माह निसि
लुवैं चलत वोहि गाम ।
बिन बूझे बिनही कहे,
जियत बिचारी बाम ।।

उत्तर:— प्रस्तुत पंक्तियाँ बिहारी की पुस्तक बिहारी से ली गई है। प्रस्तुत पंक्तियों के कवि बिहारी है।

प्रस्तुत पंक्तियों में विरहविदग्धा नायिका के जीवित होने की बात कही गई है।

प्रस्तुत पंक्तियों का भावार्थ यह है कि नायिका के विरह में तप्त होने के कारण गाँव की हवा भी नायिका के विरह के ताप के कारण गर्म हो गई है।

व्याख्यात्मक अर्थ — प्रस्तुत पंक्तियों का व्याख्यात्मक अर्थ यह है कि किसी पथिक के मुँह से जब नायक यह सुनता है कि तुम्हारी पत्नी के गाँव में माघ महीने भी लू चल रही है तो नायक समझ जाता है कि विरहाग्नि में दग्ध होकर भी मेरी पत्नी अभी जिंदा है।

क्रमशः —

OCT 2014						
S	M	T	W	T		
			1	2		
5	6	7	8	9		
12	13	14	15	16		
19	20	21	22	23		
26	27	28	29	30		

B.A. Part I   कक्षा: — डॉ० उपेन्द्र कुमार
Hindi Hons 18/12/20
बिहारी

प्रस्तुत पंक्तियों में कवि का कहना है कि विरह के ताप के कारण गाँव भर की हवा गर्म हो गई है इसी के कारण माघ मास में भी रात में लू चल रही है। अनकसर ग्रीष्म ऋतु में लू चलती है। माघ मास में नहीं। लू चलने के कारण गाँव का अनुमान लगता है कि इस माघ मास में होरी जलती दिया है।

विशेषताएं —

यह दोहा श्रृंगार परक है
इसमें ऊहात्मकता स्पष्ट रूप से दिखलाई पड़ती है। विरह में जलने के कारण यहाँ की हवा गर्म नहीं हो सकती।
यहाँ स्वाभाविकता का अभाव है।
सूरदास भी कहीं-कहीं दूर की कौड़ी लाने वाली बात कहते हैं, यथा—
दूर करहुँ बीना कर धरिबो।
प्रस्तुत पंक्तियों में अतिशयोक्ति और अनुप्रास अलंकार का प्रयोग है।

माघ की रात में ग्रीष्म का लू चलना असम्भव है।
यहाँ बिहारी के श्रृंगार वर्णन की स्वाभाविकता खंडित होती है।